ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 176-178**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

बिहार में शराबबंदी से महिलाओं की स्थिति पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (मुजफ्फरपुर जिला के संदर्भ में)

खुशबू रंजन
शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र, NET, (UGC), बी0 आर0 अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार) भारत

Received-28.10.2025, Revised-06.11.2025, Accepted-12.11.2025 E-mail: sachinsharma0621@gmail.com

सारांशः बिहार में शराबबंदी बिहार सरकार द्वारा अप्रैल 2016 से की गई, जिसका समाज एवं खासतौर पर महिलाओं की स्थिति पर प्रभाव पड़ा है। शराबबंदी ने महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, तथा पारिवारिक स्थिति पर विभिन्न तरीके से प्रभाव डाला है। शराबबंदी ने महिलाओं की सभी स्थितियों पर सकरात्मक एवं नकरात्मक रूप से प्रभाव डाला है। शराबबंदी का मुख्य कारण देखा जाए तो महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा है जो महिलाओं की स्थितियों को दर्शाता है। शराब के कारण महिलाओं को हमेशा घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ता था जिससे उनकी सामाजिक, आर्थिक, तथा पारिवारिक स्थिति दयनीय थी। महिलाओं की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए शराबबंदी को लेकर बिहार सरकार द्वारा 2016 में बिहार निषेध एवं उत्पाद शुल्क अधिनियम लागू किया गया, जिससे सख्त रुप से नशीले पदार्थों तथा शराब के सेवन को रोका जाए और महिलाओं की पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति मजबूत हो सके।

कुंजीभूत शब्द– शराबबंदी, महिला, स्थिति, प्रभाव, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थिति, दयनीय, उत्पाद शुल्क, रीति–रिवाजों।

भूमिका– भारत में महिलाओं का उत्पीड़न प्राचीन समय से ही होता रहा है, जिसका उल्लेख पुस्तकों एवं प्राचीन धर्मग्रन्थों में मिलता है और महिलाओं की स्थिति का पता चलता है जो बेहतर नहीं थी। समाज में प्रचलित रीति–रिवाजों, मूल्यों, विश्वासों एवं विचारधाराएँ भी महिलाओं की स्थिति को दर्शाता है। जिन महिलाओं के प्रति अपराध एवं हिंसा की जाती है, वे हैंः जो बहुत गरीब असहाय और अवसाद ग्रस्त होती है, जो विघटित परिवारों में रहती हैं जिनके पति शराबी एवं नशेबाज होते हैं। शराब समाज, परिवार, व्यक्ति और महिलाओं के लिए घातक है जो इन सभी पर बुरा प्रभाव डालता है खासतौर पर महिलाओं के स्थितियों पर। बिहार में शराब पर पूर्ण रुप से प्रतिबंध 2016 में बिहार सरकार द्वारा लगाया गया था। बिहार सरकार के द्वारा शराब की तस्करी, नशीले पदार्थों की बिक्री तथा शराब की तस्करी में सम्मिलित लोगों पर कारवाई करने का आदेश दिया गया। बिहार में शराबबंदी का मुख्य कारण महिलाओं के खिलाफ हो रहे शोषण में कमी लाना था जिससे उनकी स्थिति बेहतर हो सके। शराबबंदी से पहले महिलाओं को मानसिक, आर्थिक तथा भावनात्मक हिंसा का सामना करना पड़ता था। शराबबंदी के बाद से महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा में कमी देखा गया है जो कि सकरात्मक प्रभाव को दर्शाता है। मद्य–निषेध के लिए समय समय पर सामाजिक कार्यकत्ताओं की ओर से भी प्रत्यन किए जाते रहे हैं। महात्मा गांधी ने भी अपने सत्याग्रह आंदोलन में मद्य–निषेध को प्रमुख स्थान दिया। 1920–21 तथा 1930 में चलाए गए सविनय अवज्ञा आंदोलन में मद्य–निषेध का एक प्रमुख मुद्दा था। गांधी जी के नेतृत्व में महिलाओं ने भी शराब की दुकान पर धरने दिए थे। शराबबंदी के बाद से ही महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक स्थिति मजबूत हुई है। शराबबंदी से पूर्व जो पैसे पहले शराब पर खर्च होते थे, अब महिलाएँ बचत कर पारिवारिक जरुरतों को पूरा कर रहीं हैं। महिलाएँ परिवार में पुरुषों के बराबर समान भागीदारी निभाती है जिससे उनकी पारिवारिक स्थिति बेहतर हुई है। अब महिलाएँ सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक रुप से सुरक्षित महसूस कर रहीं है।

इन सब सकारात्मक पहलू के बाद भी कुछ नकरात्मक पहलू भी सामने देखने को मिलता है जैसे शराबबंदी के बाद चोरी छिपे शराब की जगह नशीले पदार्थो तथा जहरीली शराब की बिक्री एवं उपयोग बढ़ गया है। नशीले पदार्थों की बिक्री में कहीं–कहीं महिलाओं को भी सम्मिलित किया गया है। जो महिलाओं की स्थिति और समाज दोनों पर नकरात्मक प्रभाव को दर्शाता है क्योंकि शराब पारिवारिक विघटन के साथ सामाजिक विघटन का भी कारक है। एक शराबी व्यक्ति कभी–कभी ही एक अच्छा पारिवारिक व्यक्ति या सदस्य बन पाता है। अधिक पीने वाला व्यक्ति पति के रूप में अपने सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्वों को नहीं निभा पाता है। शराबबंदी के बाद से महिलाओं की स्थिति परिवार एवं समाज में बेहतर हुई है। महिलाएँ अब परिवार के फैसले में अहम् भूमिका निभाती है। समाज में भी अब महिलाओं को उचित सम्मान दिया जा रहा है। समाज में महिलाएँ पुरूषों के बराबर भूमिका निभा रही है जो सम्मान पुरूषों को दिया जाता था अब समाज में वही सम्मान महिलाओं को दिया जा रहा है।

शराबबंदी के बाद महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त हुई है। शराबबंदी के बाद महिलाओं को घर के बाहर जाकर रोजगार करने का अवसर मिला है। बिहार सरकार ने शराबबंदी के बाद सतत् जीविकोपार्जन योजना के जरिए एक लाख अति गरीब परिवारों को आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य रखा है खासतौर पर महिलाओं को रोजगार के अवसर दे रही है जिससे कि वे अपने पैरों पर स्वयं खड़े हो सके।

साहित्य समीक्षा– आहूजा के अनुसार महिलाओं की स्थिति के सबंध में देखा जाए तो महिलाओं की स्थिति पहले अच्छी नहीं थी क्योंकि पहले समाज में महिलाओं को हिंसा के कई रुपों का सामना करना पड़ता था जिसका मुख्य कारण मदिरा, नशीले पदार्थों तथा शराब का सेवन था।

– डॉ० श्रीनिवास के अनुसार पश्चिमीकरण, लौकिकीकरण, तथा जातीय गतिशीलता ने स्त्रियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को उन्नत करने में काफी योगदान दिया है। वर्तमान में स्त्री–शिक्षा का प्रसार हुआ है।

– इलियट एवं मैरिल के अनुसार वे लोग जो बहुत संकोची, भावुक, सामाजिक दृष्टि से असुरक्षित तथा कठिनाइयों का सामना करने में असमर्थ होते है, मद्यपान को एक विकल्प के रूप में स्वीकार करते है।

– स्ट्रेकर के अनुसार व्यक्ति शराब पीकर हीनता और असुरक्षा से अपने को मुक्त समझने लगता है।

अध्ययन का उद्देश्य– बिहार में शराबबंदी का महिलाओं की स्थिति पर प्रभाव के सबंध में अध्ययन का उद्देश्य निम्न प्रकार से हैः

– शराबबंदी से महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव का अध्ययन।

– शराबबंदी से महिलाओं की पारिवारिक आय पर प्रभाव का अध्ययन।

– शराबबंदी के बाद महिलाओं की पारिवारिक स्थिति का अधययन।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

अध्ययन क्षेत्र एवं पद्धति– अध्ययन विषय से सबंधित उपकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन का उद्देश्य जानने के बाद मुजफ्फरपुरजिला के बोचहाँ प्रखण्ड को अध्ययन क्षेत्र के रुप में चयनित किया गया है। अध्ययन क्षेत्र से उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति से 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया तथा अनुसूची का निर्माण कर साक्षात्कार प्रविधि के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है। उनसे प्राप्त तथ्यों का सारणीयन व विश्लेषण किया गया है।

तथ्य विश्लेषण– अध्ययन क्षेत्र से चयनित किये गये उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार है:

तालिका संख्या – 01

क्या आपको लगता है कि शराबबंदी का महिलाओं की स्थिति पर सकरात्मक प्रभाव पड़ा है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	92	92
नहीं	08	08
कुल	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न क्या आपको लगता है कि शराबबंदी का महिलाओं की स्थिति पर सकरात्मक प्रभाव पड़ा है, तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाताओं के 92 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति में अपना जबाव दिया है जबकि 08 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में जबाव दिया है।

तालिका संख्या – 02

क्या आप इस बात से सहमत है कि शराबबंदी के बाद महिलाएँ सामाजिक रुप से मजबूत हुई है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	92	92
नहीं	08	08
कुल	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न क्या आप इस बात से सहमत है कि शराबबंदी के बाद महिलाएँ सामाजिक रुप मजबूत हुई है, तो सभी उत्तरदाताओं के 82 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति में अपना जबाव दिया है, जबकि 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या – 03

क्या आपको लगता है कि शराबबंदी के बाद महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा में कमी आयी है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	92	92
नहीं	08	08
कुल	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पूछे गए प्रश्न क्या आपको लगता है कि शराबबंदी के बाद महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा में कमी आयी है, तो प्राप्त उत्तर तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाताओं के 89 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति में अपना जबाव दिया है, जबकि 11 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या – 04

क्या आप इस बात से सहमत हैं कि शराबबंदी ने पारिवारिक आय को प्रभावित किया है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	86	86
नहीं	14	14
कुल	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि पूछे गए प्रश्न क्या आप इस बात से सहमत है कि शराबबंदी ने पारिवारिक आय को प्रभावित किया है, तो सभी उत्तरदाताओं के 86 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहमति में अपना जबाव दिया है, जबकि 14 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति में जबाव दिया है।

तालिका संख्या – 05

क्या आपको लगता है कि शराबबंदी ने महिलाओं को आर्थिक रुप से सशक्त बनाया है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	संख्या	प्रतिशत
हाँ	86	86
नहीं	14	14
कुल	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि पूछे गए प्रश्न क्या आपको लगता है कि शराबबंदी ने महिलाओं को आर्थिक रुप से सशक्त बनाया है, तो सभी उत्तरदाताओं के 87 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपना जबाव सहमति में दिया है, जबकि 13 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने असहमति में जबाव दिया है।

निष्कर्ष– इस प्रकार स्पष्ट होता है कि महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन एवं सुधार करने में शराबबंदी की भूमिका अहम् रही है। बिहार सरकार शराबबंदी को लेकर कई सारी नशामुक्ति केन्द्र की स्थापना की जिससे लोगों द्वारा शराब के सेवन करने की लत को समाप्त किया जाए। शराबबंदी ने लोगों की सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक जीवन को शांतिपूर्ण बनाया है। सरकार ने शराबबंदी को लेकर लोगों को जागरुक विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा किया है जिससे लोगों में जागरुकता आए। साथ ही शराब के खराब प्रभाव के बारे में जानकारी दी जा सकें। शराब से समाज पर बुरा प्रभाव पड़ने के साथ ही महिलाओं पर भी बुरा प्रभाव डाला है इसलिए बिहार सरकार ने नशामुक्ति केन्द्र और बिहार निषेध एवं उत्पाद शुल्क अधिनियम के जरिये शराब को जड़ से खत्म करने का प्रयास की है।

शराबबंदी ने महिलाओं को परिवार में घरेलू हिंसा से बचाया है साथ ही समाज में महिलाओं के खिलाफ होने वाले दुर्व्यवहार से भी बचाया है।

शराबबंदी के बाद महिलाएँ आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर बन रही है तथा परिवार में अहम् भूमिका निभाती नजर आती है। शराबबंदी के बाद से महिलाएँ स्वतंत्र रूप से सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत् सरकार के द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त कर रोजगार के माध्यम से पारिवारिक जरूरतों को पूरा करती है। इसलिए शराबबंदी को महिलाओं की स्थिति को मजबूत करने में अहम् भूमिका माना जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, सुभाष (2012); भारतीय महिलाओं की दशा, आधार प्रकाशन, पंचकुला (हरियाणा), द्वितीय संस्करण।
2. योजना एवं कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. आहूजा, राम (2012); सामाजिक समस्याएँ, द्वितीय संस्करण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
4. एम० एन० श्रीनिवास (1966); सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
5. बत्रा, उर्मिला (2012); महिला साक्षरता एवं सामाजिक परिवर्तन, मार्क पब्लिसर्स, जयपुर।

*****